॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे विधाता ! जब तक आपकी करुणा न होगी, दया न होगी तब तक हम कदापि भी आपके आँगन में न आ सकेंगे। हे विधाता ! हमारे हृदय में शान्ति उत्पन्न करो, आज हम नास्तिक बनते जा रहे हैं, नास्तिक से आस्तिक बनाओ। आज हम क्या करें व्याकुल ही होना पड़ रहा है। हम तो अभागे नहीं थे परन्तु क्या करें आपके इस प्राकृतिक विचित्र खेल ने हमें इतना तुच्छ बना दिया है। जब आपकी करुणा हो जाती है ब्रह्मचारी बन जाते हैं, हमारा जीवन उच्च विलक्षण बन जाता है इसलिए हे विधाता ! दया करो, हमारी आत्मा, हमारा अन्तःकरण सब कुछ आपके अधीन है। प्रकृति के यह नाना आवेश, नाना चमत्कार हमारे समक्ष आते हैं तो हम इतने तुच्छ बन जाते हैं आत्मा में इतनी दुर्बलता आ जाती है कि आपसे विपरीत चलने लगते हैं, यह सूक्ष्मता तो है हममें। जब विधाता आपकी करुणा हो जायेगी तो महान् बन जायेंगे।

–पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 497 समग्र अंक : 572
वर्ष : 42 समग्र वर्ष : 48

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	1
2.	अनुक्रम		2
3.	यौगिक शब्द	पूज्यपाद-गुरुदेव	3-19
4.	आत्म-उत्थान का मार्ग	पूज्यपाद-गुरुदेव	20-35
5.	दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना आदि		36-40

चतुर्वेद ब्रह्म-पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 2 मार्च, 2014 से 9 मार्च, 2014 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पंजी.)

॥ ओ३म् ॥

यौगिक-शब्द

जीते रहो,

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महान् हैं और वह विज्ञानवेत्ता हैं और वह विज्ञानमय स्वरूप भी माने जाते हैं। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा, जो त्रिवर्धा कहा जाता है। आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में त्रिवर्धा का बड़ा वर्णन आता रहा है क्योंकि त्रिवर्धा का अभिप्रायः ये कि ये संसार का प्रत्येक आभा में यह त्रिवर्धा से मानो तीन-तीन से विभाजन किया गया है। तो विभक्त होने से इसको त्रिवर्धा कहा जाता है।

त्रिवर्धा की विवेचना

आज का हमारा वेद-मन्त्रः त्रिवर्धस्वनम् ब्रह्मात्रि वर्णस्सुतम देवाः। वेद का मन्त्र कह रहा है कि त्रिवर्णों में और त्रिमात्राओं में ये संसार अपने में निहित हो रहा है और त्रिविज्ञान में, त्रिविद्या में। तो इसीलिए हम त्रिवर्धनम् त्रिवर्णस्सुतम् देवत्वाम् त्रिवाणम् क्रते देवाः। तो हम त्रिवर्णों की आभा में रत्त होते चले जाएँ जिससे हम परमपिता परमात्मा को अच्छी प्रकार जान सकें। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा का जो नामोकरण है वह त्रिमात्रा वाला है जैसे उ और म अमृतं उ और म की प्रतिभा में मानो त्रिविद्या में वह परणित हो रहा है।

तो हम उस परमपिता परमात्मा को त्रिवर्धा स्वीकार करते रहे हैं क्योंकि वेद में **तीन प्रकार की विद्या** का वर्णन आता रहा है। सबसे प्रथम विद्या हमारे यहाँ ज्ञानम् ब्रहे मानो ज्ञान और कर्म और उपासना के रूप में परणित होती रही है। तो प्रत्येक मानव संसार का अपने में विज्ञानवेत्ता और ज्ञानी बनना चाहता है। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा लगी रहती है क्या मैं अपने में ज्ञान और विज्ञानवेत्ता बन जाऊँ और ज्ञान में रत्त होता हुआ इस संसार को जानूँ और जानने के पश्चात् वह कर्म में, अपने में विश्वसनीय बनता है और कर्म के पश्चात् वह उपासना के क्षेत्र में प्रवेश करता है। तो मुनिवरो ! इसीलिए हमारे यहाँ त्रिवर्धा और त्रिविद्या का प्रायः वर्णन होता रहा है। **प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ही इन तीन प्रकार की विद्याओं के आँगन में रमण करता रहा है।** नाना प्रकार के अनुष्ठान हों, चाहे वह चिन्तन करने का विषय हो परन्तु चाहे वह अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ने वाला क्यों न यन्त्र हो परन्तु वह सब ज्ञान, कर्म और उपासना में निहित हो रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है अथवा वह जो त्रिवर्धा है उसके ऊपर हम सदैव अपने में विचार-विनिमय करते रहें और यह विचारते रहें कि वह परमपिता परमात्मा हमारा आनन्दमयी स्वरूप है और वह त्रिवर्धा, त्रिमात्राओं से मानो ओत-प्रोत है। **संसार में तीन ही प्रकार की मात्रा कही जाती हैं और तीन ही प्रकार के गुण कहे जाते हैं** बेटा ! सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। यह तीन प्रकार के गुणों में मानव विभक्त हो रहा है।

इसी प्रकार त्रिवर्धानम् ब्रह्माम्ब्रहे हमारे यहाँ जब यजमान अपनी यज्ञशाला में याग करता है तो वह तीन प्रकार की मानो मेखलाओं का अवधान करता है। वह तीन मेखला का अभिप्रायः भी ये ही है कि ज्ञानाम्, कर्मणां, उपासनम् भूतप प्रव्हा लोकाम् मानो देखो इन तीनों के द्वारा लोकों में जाना चाहता है। भू, भुर्वः, स्वः इन तीनों को जान करके वह मानो अनन्तमयी प्रकाश में जाना चाहता है जो

द्यौ के ऊर्ध्वा अग्र भाग में रत्त रहता है। और इनको जान करके मानो देखो तीन प्रकार के परमाणुओं को जान करके विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है। विज्ञानवेत्ता वही बनता है जो तीन प्रकार के परमाणुओं को जानने में लगा हुआ है। मानो देखो तेजोमयी, तरलत्व और गुरुत्व यह तीन प्रकार के परमाणु हैं जिसकी आभा ये विज्ञान जिसमें निहित हो रहा है। चाहे वह मानो इस पृथ्वी मण्डल का विज्ञानवेत्ता हो, चाहे वह मंगल मण्डल का विज्ञान हो चाहे और भी नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों का विज्ञान क्यों न हो परन्तु वह विज्ञान केवल त्रिवर्धा में निहित रहने वाला है। वहाँ भी गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी यह मानो देखो अपने में अभ्योदय हो रहा है जिससे मानव विज्ञानवेत्ता कहलाता है और वह नाना प्रकार की उड़ानें उड़ता रहता है।

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या अन्तरिक्ष में बेटा ! ऐसी-ऐसी स्थलियाँ हैं जहाँ देखो विज्ञानवेत्ता अपने यन्त्रों में विद्यमान हो करके वह यन्त्र स्थित कर दिए और नाना प्रकार के लोकों की सीमाओं को वह प्रायः दृष्टिपात करते रहे हैं। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या हमारे यहाँ देखो अमृतम् ब्रव्हे क्रतम् देवाः हमारे यहाँ बेटा ! एक **मारकण्डेय ऋषि** ऋषि हुए हैं जो मेरे प्यारे ! देखो वह भाकृति हरि और श्वेतम् गोत्रों में कहलाये गये परन्तु उनमें यह विशेषता थी क्या वह विज्ञानवेत्ता बहुत मार्मी व्रतम् ब्रव्हा वह विज्ञान में सदैव रत्त रहते थे और वैज्ञानिक यन्त्रों में विद्यमान हो करके वह **चन्द्रमा और पृथ्वी की जहाँ सीमा का सन्निधान होता है वहाँ यन्त्रों को स्थिर किया करते** और वह वहीं से देखो विज्ञान में, अपने में अणु और परमाणु का भी विभक्त होना उनके लिए स्वाभाविक अभ्योदय हो गया था। तो जिससे बेटा ! देखो उनका नामोकरण, मारकेण्डय ऋषि का नामोकरण अपने में बड़ा स्थलियों पर रहा है। बेटा ! आज मैं तुम्हें विज्ञान के वाङ्मय में या विज्ञान में नहीं ले जाना चाहता हूँ।

केवल विचार-विनिमय ये कि हमारा वेद क्या कहता है। वह

त्रिवर्धा को उद्गीत गा रहा है। वेद में मानो देखो तीन प्रकार की विभक्तियों में मानो देखो यह संसार रत्त रहा है। **तीन ही प्रकार के शरीर होते हैं।** आत्मा जब मानो इस संसार में आता है, किसी भी काल में आया तो परमपिता परमात्मा ने तीन प्रकार के शरीर दिये, सबसे प्रथम स्थूल, सूक्ष्म और कारण। मानो यह कारण या स्थूल या स्थूलम ब्रह्मा देखो सूक्ष्माम् यह तीन प्रकार के शरीर आत्मा के माने जाते हैं। मेरे प्यारे ! देखो सबसे प्रथम कारण है जहाँ ज्ञान और प्रयत्न दोनों रहते हैं और मुनिवरो ! देखो उसके पश्चात् सूक्ष्म है जहाँ मुनिवरो ! देखो दस प्राण हैं, पञ्च तन्मात्राएँ हैं और मुनिवरो ! देखो अमृतम् प्रकृति की वासनाएँ हैं और मन और बुद्धि यह सत्रह देखो सत्रह आभाओं का निर्मित होने वाला सूक्ष्म शरीर कहलाता है। और मुनिवरो ! देखो चौबीस का स्थूल कहलाता है जिसमें दस प्राण हैं, दस ज्ञानेन्द्रियाँ हैं ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ दस ये कहलाती हैं। परन्तु देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है। तो परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया तो मुनिवरो ! देखो यह अभ्यम् ब्रह्मे **दो प्रकार का जगत** मेरे देव ने निर्माणित किया है। और वह दो प्रकार का जगत एक जगत देखो बाह्य जगत है जिसे संसारिक जगत कहते हैं और एक आन्तरिक जगत माना गया है जो अन्तरात्मा से नाना प्रकार की प्रेरणाओं का जन्म होता रहता है और उससे प्रेरित हो करके यह अपने में रत्त रहता है। यह प्रेरणा को पाता रहता है।

आओ मेरे प्यारे ! देखो जब याज्ञिक पुरुषों ने यह विचारा कि यह याग क्या है तो इसके ऊपर उन्होंने आन्तरिक और बाह्य जगत दोनों का समन्वय किया। उन्होंने मुनिवरो ! देखो ज्ञान और विज्ञान को भी इसी में समावेश किया है। उसके पश्चात् उन्होंने याग की कर्मकाण्ड की पद्धतियों का निर्माण किया जिससे वह पद्धति मानो देखो एक साकार बन करके मानव के जीवन को शिक्षाप्रद बना देती है। तो मुनिवरो ! देखो इसी प्रकार हमारे यहाँ त्रिवर्णन प्रव्हा आचार्यो

का यह कथन रहा है क्या दोनों प्रकार के जगत को मानव को जानना चाहिए। **यदि मानव यह चाहता है कि मैं इस संसार सागर से पार हो जाऊँ या मैं अपने में ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाऊँ तो यह दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को जानने के लिए वह तत्पर हो जाए और यह तीनों प्रकार का जो शरीर है आत्मा का या आन्तरिक या बाह्य जगत उन सर्वत्रतता को जानना चाहिए।**

मेरे प्यारे ! देखो मुझे बहुत सा काल प्रायः स्मरण आता रहता है। जब मानव देखो तपस्या में परणित होता है तो तप करने के पश्चात् वह अपनी आभा में रत्त होता है और तपश्चर हो करके किसी शब्द को वह निर्धारित करता है इसे यौगिक शब्द कहते हैं वह अकाटय बन जाता है। उसे कोई मानव टिप्पणी नहीं कर सकता। तो इसीलिए वह तपस्वियों का और वह तपोमयी ही जीवन कहलाता है। तो विचार आता रहता है बेटा ! देखो हमारे यहाँ दो प्रकार के यागों की परम्परायता मानी जाती है। एक आध्यात्मिक याग है तो दूसरा भौतिक विज्ञान और भौतिक याग के नामों से वर्णन किया गया है। आज मैं बेटा ! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं प्रगट कर रहा हूँ क्योंकि हमारे यहाँ नैतिक कर्म काण्ड की पद्धतियों में भी प्रायः देखो याग का अपना बड़ा महत्त्व माना गया है और राष्ट्रीय स्थलियों पर भी याग को अपनी स्थलियों में महानता का स्थान दिया है। तो विचार आता रहता है **हे मानव तू अपने में याज्ञिक बन।** तेरे प्रत्येक इन्द्रियों का जो साकल्य है, प्रत्येक इन्द्रियों का जैसे नेत्रों का साकल्य दृष्टिपात करना है सु और कु-दृष्टि नहीं, मानो सुदृष्टि उसका साकल्य बन करके रहता है। जैसे मुनिवरो ! देखो मानव के श्रोत्रों में शब्द आते हैं और वह शब्द में जितनी भी शुद्धता रहती है, जितना भी सु शब्द होता है उतना ही तेरे यह जो कर्णोन्द्रिय है यह सजातीय बन जाती हैं। मुनिवरो ! देखो इसी प्रकार ब्रह्मणां ब्रव्हा क्रतम् देवत्वाम् देखो प्रत्येक इन्द्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियाँ हैं उनका सबका साकल्य एकत्रित

किया जाता है। **साकल्य कहते हैं चरू को और चरू कहते हैं जो एकत्रित किया हुआ जो मानो तरंगवाद है उसका नाम चरू कहलाता है** और उसको ले करके जब यजमान अथवा आध्यात्मिक यागवेत्ता याग करता है तो अपने हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो याज्ञिक बन करके अपने को ऊँचा बनाता है, अपने को देवत्त्व बना देता है। तो इसी प्रकार मुनिवरो ! देखो यह त्रिवर्णस्सुतम् ब्रह्मा वरो व्रतम यह त्रिवर्धा कहा जाता है। यह **त्रि-आभा में रत्त रहने वाला जगत है।**

विष्णु के स्वरूप

मेरे प्यारे ! देखो तीन प्रकार के गुण मानव के समीप होते हैं। सबसे प्रथम देखो गुण का नामोकरण हमारे यहाँ सतोगुण आता है। सतोगुण में, सत में ही रहने वाला वह सतो में रमण करने वाला है। जैसे बेटा ! हमारे यहाँ विष्णु शब्द आता है तो विष्णु शब्द का, वह शब्द में ही निहित रहने वाला है। तो वह विष्णु कहते हैं पालन करने वाले को। मेरे पुत्रो ! इसमें दो शब्दों, दो प्रकार के शब्दों की आभा हमारे समीप आनी प्रारम्भ होती है—एक यौगिक शब्द है तो दूसरा रूढ़ि कहलाता है। जैसे मुनिवरो ! देखो विष्णु का अभिप्राय है पालन करना। पालन करने का नाम बेटा ! देखो वह यौगिक शब्द है वह प्रत्येक आभा में निहित रहने वाला है क्योंकि वैदिक साहित्य में आता है नमनतम ब्रह्मा विष्णु वर्णनम् ब्रहे देवाः क्या देखो विष्णु शब्दों में नाना प्रकार की आभाएँ आती रहती हैं क्योंकि माता का नाम विष्णु है। माता को इसलिए विष्णु कहते हैं क्योंकि वह पालना करने वाली है जैसे परमपिता परमात्मा पालक है और वह विष्णु कहलाता है। **विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है।** पालन करने वाले को ही विष्णु कहा जाता है। मेरे प्यारे ! देखो मुझे स्मरण आता रहता है। त्रेता के काल में जब मुनिवरो ! देखो भगवान् राम प्रातःकालीन अपनी यज्ञशाला में याग करते रहे तो वह मुनिवरो ! देखो विष्णु के द्वार पर जाने का प्रयास भी करते रहे। और वही काल

है मंगलम् ब्रह्मा वर्णस्सुते जब मुनिवरो ! उन्होंने समुद्र के तट पर भी याग किया था तो वहाँ भी उनका यह उपदेश प्रारम्भ रहता और वह विष्णु की आभा में रत्त रहते और यह कहा करते कि राजा को विष्णु बनना है और देखो प्रजा को मेधाम् भूतम् ब्रह्मा और प्रजा का पालन करना है क्योंकि माता-पिता भी दो प्रकार की सन्तान को जन्म देते हैं। वास्तव में त्रिवर्धा वह भी कहलाते हैं। एक वह होते हैं जो प्रजा के रूप में हैं, एक सन्तान के रूप में होते हैं। प्रजामयी वह होते हैं जो इदन्नममः त्यागपूर्वक माता-पिता देखो सन्तान को जन्म देते हैं और वह माता विष्णु बन करके उसका पालन करने वाली है। तो मुनिवरो ! देखो अमृतम् देखो वह प्रजा कहलाती है। तो इसीलिए परमपिता परमात्मा जो विष्णु है उसका नाम पालक है, वह पालना करने वाला है। तो मुनिवरो ! इसके बहुत से पर्यायवाची शब्द आते रहे हैं जो मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा है क्या विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है जो पालक है, जो मानो हमारा, देखो अनुशासन में हमें धारण करने वाला है, जो इस संसार को अनुशासन में मानो अनुशासित करने वाला है। जैसे सूर्य प्रातःकाल अपने समय पर उदय होता है। चन्द्रमा अपनी आभा में उदय होता है। रात्रि अपने समय पर आती है परन्तु वायु वेग में भ्रमण करती है। इसी प्रकार यह नाना प्रकार के तारामण्डल एक दूसरे की माला बने हुए हैं। यह परमपिता परमात्मा का नियम है अथवा उसी का यह अनुशासन है और अनुशासन में रत्त रहने वाले हैं।

मेरे प्यारे ! देखो जब ऋषि इस प्रकार वर्णन करने लगे अमृतम् ब्रह्मा देवत्वाम् भू वर्णनं ब्रहे तो उन्होंने कहा कि विष्णु नाम जहाँ परमात्मा का है वहाँ **माता का नाम विष्णु है।** माता भी पालन करने वाली है लोरियों का पान करा रही है परन्तु देखो उसे शुद्ध, बुध, निरंजन यह उपदेश दे रही है और उपदेश दे करके कहती है हे बालक तू बुद्ध है, तू शुद्ध है, तू निरंजन है। मानो देखो इस

प्रकार का उपदेश देती हैं और बुद्धोसि, शुद्धोसि, निरंनजनसी कह कर करके जब लोरियों का प्रसन्न हो करके पान कराती है **तो माता के हृदय की जो तरंगे हैं वह मानो देखो बाल्य के अन्तर्जगत में प्रवेश हो जाती हैं। उन्हीं तरंगों से देखो मन अपने में गति करने लगता है।**

मेरे प्यारे ! देखो हमारे वैदिक साहित्य में माता का नाम विष्णु कहा गया है और विष्णु नम ब्रह्मे देखो विष्णु नाम जहाँ माता का है वहाँ **विष्णु नाम बेटा ! सूर्य का है।** सूर्य को इसलिए विष्णु क्योंकि वह पालक है, पालना करने वाला है। नाना प्रकार का प्रकाश देता रहता है और वह मुनिवरो ! देखो उर्ज्वा देता है, प्रकाश देता रहता है। मेरे प्यारे ! देखो उसी से उत्तरायण और दक्षिणायन बनते रहते हैं। देखो दो पक्ष बने एक दक्षिणायन एक उत्तरायण पक्ष बन गया। तो मुनिवरो ! देखो इसलिए मानव के जीवन में भी इसी प्रकार के दो पक्ष कहलाते हैं एक उत्तरायण है तो एक दक्षिणायन कहलाता है। दक्षिणायन कहते हैं अन्धकार को और मुनिवरो ! देखो समब्रहे और उत्तरायण कहते हैं प्रकाश को। तो यह दोनों ही मानो देखो एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो विचार आता रहता है मुनिवरो ! देखो वह अमृतम् यह सूर्य अपने में विष्णु है जो प्रकाश का द्युतक है और ये द्यु से प्रकाश ले करके प्रकाश देता रहता है। यह उर्ज्वा मेरे प्यारे ! देखो नाना खनिजों पर जब प्रव्हे अकृतियों में रत्त होती है तो खनिजों को सजातीय बना देती है और वही खनिज मेरे प्यारे ! मुद्रा के रूप में मुद्रित हो जाती है। तो विचार आता रहता है मुनिवरो ! देखो यह सूर्य विष्णु है जो प्रकाश के देने वाला है, पालक है। यह प्रातःकाल में जब उदय होता है तो यह प्रकाश को ले करके उकान्ता अपने में ऊषा और कान्ता किरणों को ले करके उदय होता है। मेरे प्यारे ! रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है और यह नाना तारामण्डलों के प्रकाश को भी अपने में धारण कर लेता है और यह विष्णु बन करके नाना प्रकार की उर्ज्वा देता है। इससे

वनस्पतियाँ जागरूक हो जाती है और यह वनस्पति में, अपने में रत्त हो करके मानो बेटा ! अपने में जागरूक हो जाता है।

मेरे प्यारे ! विचार आता रहता है कि विष्णु नाम हमारे यहाँ सूर्य को कहा गया है और विष्णु नाम जहाँ सूर्य को कहा गया है वहाँ विष्णु नाम बेटा ! **राजा का नाम विष्णु है।** राजा का नाम विष्णु इसलिए है क्या राजा मुनिवरो ! देखो वह भी पालक है, पालन करने वाला है और जो पालना के मूल में आता है उसी का नाम विष्णु है। वही शब्द यौगिक बन करके मानव के अन्तःकरण को स्पर्श करता है और मानव का अन्तःकरण पवित्र बनता है। तो मेरे प्यारे ! वह राजा का नाम विष्णु कहा जाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा ! एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा था कि विष्णु क्या है? तो एक वेद-मन्त्र का उन्होंने उद्गीत गाया और वेद-मन्त्र का उद्गीत गाते उन्होंने कहा विष्णु ब्रह्मा क्रतम लोकाम् भूतम् ब्रह्मे लोका व्रता। मेरे प्यारे ! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में न्यौदा में से मन्त्रों का उद्गीत गाया और उद्गीत गाते बेटा ! देखो राम और वृतिका ब्रह्मचारी दोनों से कहा जाओ इस मानो देखो मन्त्र के रूप को लाओ। तो मुनिवरो ! देखो दोनों ने विद्यालय के आंगन से वह बाह्य जगत में चले गये और वह अपने में विचारने लगे और विचारने लगे तो कहीं तो मानो देखो विष्णु, विष्णु ध्रुवा में रहता है, कहीं विष्णु ऊर्ध्वा में रहता है, कहीं मानो देखो ऊर्ध्वा में लोक-लोकान्त बनते हैं और कहीं ध्रुवा में जाते हैं तो पालक बनता है। इसी प्रकार उनकी विचारधाराएँ और उनका जो मन्तव्य चिन्तन करने का वह अपने में निबटारा नहीं हो सका। बहुत समय हो गया जब निबटारा नहीं हुआ तो मुनिवरो ! देखो वह अमृतम सायँकाल हो गया प्रातः से, दोनों विचार-विनिमय करने लगे कहीं लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगे, कहीं मानो देखो पालना के क्षेत्र में चले जाएँ, कहीं वह किसी क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाए। तो मेरे प्यारे ! देखो जब

वह प्रातःकालीन से सायँकाल को महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के पुनः आश्रम में पधारे और दोनों देखो वह अपने में, निन्द्रा में जागरूकता में नहीं, वह शान्ति में अपने कक्ष में विद्यमान थे।

मेरे प्यारे ! जब दोनों ब्रह्मचारी उनके द्वार पर पहुँचे उन्होंने कहा कहो राम तुम्हारा ऐसा अमृतम ब्रहे वर्णस्तम। मेरे प्यारे ! उन्होंने कहा प्रभु हम अपने में कोई निपटारा नहीं कर सके जो मन्त्र आप ने हमें उद्गीत गाया। हमारे विचार में यह आया है विष्णु नाम आप ने देखो विष्णु हम लोकों को कहते हैं जो पालना के क्षेत्र में रहते हैं और विष्णु नाम ध्रुवा में रहता है। ध्रुवा कहते हैं जो नम्र बनता है। परन्तु हम एकोकी वाक् उच्चारण नहीं कर सकते, विष्णु किसे कहें? तो मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने कहा विराजो। वह विराजमान हो गये। तो महात्मा महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य देते हुए कहा क्या हे ब्रह्मचारियों **विष्णु कहते हैं जो ब्रह्म को जानने वाला है।** विष्णु कहते हैं जिसके बिना देखो शून्यता को प्राप्त हो जाते हैं, **देखो, विष्णु नाम आत्मा को कहा जाता है।** आत्मा यदि इस शरीर में नहीं रहेगा तो यह मानव का शव शून्यता को प्राप्त हो जाएगा। तो इसलिए शून्यम ब्रह्मा वर्णे जिसके बिना हम रह नहीं सकते, जिसके बिना हमारा जीवन संचारित नहीं हो सकता उसका नाम विष्णु कहा जाता है। और विष्णु नाम मानो देखो शासक का है जो शासक, जो शासन करने वाला है। प्रत्येक इन्द्रियों को जो जितेन्द्रीय बना करके और वह विष्णु बनता है, वह ध्रुवा में अपनी गति बना लेता है। जैसे माता की गति ध्रुवा हो जाती है जब माता पुत्रवती बन जाती है, जब वह प्रजावान बन जाती है। तो माता की गति ध्रुवा बन जाती है और ध्रुवा कहते हैं जो पालन करने वाला है। इसलिए विष्णु नाम ध्रुवा में रहता है और मुनिवरो ! देखो उन्होंने कहा सम्भव ब्रहे और देखो विष्णु नाम हमारे यहाँ देखो राजा का नाम विष्णु है। यह विवेचना बेटा ! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन की है विष्णु नाम राजा का है जो राजा के यहाँ राजा जितेन्द्रीय

बन करके देखो अपने में पालक बनता है उसका नाम देखो उस राजा का नाम विष्णु कहा जाता है। हमारे यहाँ विष्णु की विवेचना करने वालों ने अपने-अपने मन्तव्य दिये हैं। उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्मणा लोकाम् वाचनूनमय विष्णु। हे विष्णु ! तू कल्याण करने वाला है। राजा का नाम विष्णु है।

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे राम देखो राजा का नाम विष्णु जिस राजा के चार प्रकार के नियम होते हैं, जैसे गृह स्वामी और गृह स्वामिनी अपने गृह को ऊँचा बनाते हैं और उनके यहाँ चार प्रकार की नियमावली होती है। ऐसे राजा के राष्ट्र में भी चार प्रकार की नियमावली होनी चाहिए सबसे प्रथम नियमावली में चरित्र आता है जिसको हम **पद्म** के नाम से वर्णन करते हैं। पदनाम भूतम् ब्रहे लोकाम् मानो देखो जो चरित्र का प्रतीक और अनुशासन का प्रतीक माना गया है। इसके पश्चात् देखो एक कन्याम भूतम् ब्रहे राजा के राष्ट्र में एक कन्या दूसरे राष्ट्र के छोर तक चली जाए परन्तु उस कन्या को पुत्री और माता की और भौजाई की दृष्टिपान करने वाला समाज हो और वह समाज अपने में महानता का दर्शन करता रहे तो मानो देखो उस काल में राजा के राष्ट्र में देखो पद्म का प्रतीक बनता है। उसके पश्चात् गदा का प्रतीक बनता है **गदा** कहते हैं जिस राजा के राष्ट्र में क्षत्रिय सुचरित्र होते हैं और क्षत्रिय गदा से युक्त होते हैं। वह मानो देखो दुराग्रह का विनाश करने वाले और जो महापुरुषों की रक्षा करने वाले जो राष्ट्र का प्रहरी बन करके, अपने राष्ट्र को जो उन्नत बनाता है सबसे प्रथम देखो अपना शरीर रूपी जो राष्ट्र है वह इदस राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। मानो देखो इस राष्ट्र में आत्मा धिराज है और यह मन और प्राण दोनों मानो देखो इसके प्रहरी कहलाते हैं। आत्मा के द्वारम ब्रह्मे देखो वह प्रहरी बन करके जो इनको जानता है वह वास्तव में देखो वह प्रहरी बन करके जो इनको जानता है वह वास्तव में देखो अपने में देखो युक्त, गदा युक्त होता है। जो ज्ञान युक्त होता है और बाह्य जगत में

वही राजा के राष्ट्र में मानो देखो क्षत्रिय प्रहरी बन करके और वह राजा के राष्ट्र को उन्नत बनाने में लगे रहते हैं और राजा का राष्ट्र मानो देखो ध्रुव देखो दुरिता को नष्ट करना और महानता को जन्म देना उसका नाम मुनिवरो ! देखो क्षत्रिय कहा जाता है। और राजा के राष्ट्र में मानो देखो **संस्कृति** होनी चाहिए, सम ऐसी नियमावली होनी चाहिए जिसको प्रत्येक पृथ्वी का राष्ट्र उसको अपनाने वाला हो ऐसी नियमावली वाला देखो राष्ट्र होना चाहिए और देखो साम ब्रहे अपनी संस्कृति का प्रसार करने वाला हो।

मुझे बेटा ! भगवान् राम का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। भगवान् राम ने मानो देखो लंका को विजय किया, पातालपुरी को विजय किया। उन्होंने और भी नाना राष्ट्रों को विजय किया क्यों किया और विजय करके उन्हीं को राष्ट्र प्रदान कर दिया। क्योंकि उन्होंने अपनी संस्कृति का प्रसार किया। संस्कृति उसे कहते हैं जिसमें मानवता हो, जिसमें मानो देखो महानता हो और विज्ञानता हो और उसमें मानो देखो मानव विज्ञान की प्रतिभा महानता में रत्त रहने वाली हो। तो ऐसा जो नियम होता है राजा के राष्ट्र में वह अमृतम् ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे वह संस्कृति का प्रतीक कहलाता है। संस्कृति, देखो भगवान् राम का जीवन जिन्होंने दृष्टिपात किया है अथवा अध्ययन किया है उन्हें यह प्रतीत है कि उनका जीवन कितना महान् रहा है। बेटा ! देखो उन्होंन अहिरावण को नष्ट किया और मकरध्वज को, हनुमान के पुत्र मकरध्वज को वहाँ का धिराज बनाया और धिराज बना करके मुनिवरो ! देखो वह पातालपुरी उसी को प्रदान कर दी। उन्होंने स्वेधज नाम के राजा को नष्ट किया। मेरे प्यारे ! देखो अहिरावण जो राजा वहाँ का संस्कृति से विपरीत हो रहा था उन्हें नष्ट किया और नष्ट करके मुनिवरो ! उन्होंने स्वेधा त्रेताम नाम का राजा देखो वहाँ का धिराज बनाया। मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने रावण को नष्ट किया तो विभीषण को वहाँ का धिराज बनाया और संस्कृति का प्रसार किया।

मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने नाना राजाओं के यहाँ संस्कृति का प्रतीक बना करके अपने नामोकरण को ऊर्ध्वा में पहुँचाने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे ! देखो आज मैं भगवान् राम की प्रशंसा करने नहीं आया हूँ। विचार विनिमय केवल यह कि उनका जो क्रियाकलाप रहा है उनके जीवन में जो उनकी महानता रही उसका वर्णन करने जा रहा हूँ।

मेरे प्यारे ! देखो राजा के राष्ट्र में प्रायः देखो संस्कृति का प्रसार यह मानो तृतीय भुज कहलाता है और चतुर्थ जो भुज है वह मुनिवरो ! देखो **शंख ध्वनि** कहलाती है। शंख ध्वनि के सम्बन्ध में ये अमृतम् वेदाम् भूतम् ब्रह्मे लोकाम् वृति देवाः—राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होने चाहिए। जिस राजा के राष्ट्र में तपस्वी ब्राह्मण होते हैं उस राजा का राष्ट्र पवित्र होता है और जिस राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण बनते हैं परन्तु वह ब्राह्मण नहीं हैं कुछ समय में मानो देखो ब्रह्मत्व नष्ट हो जाएगा और राष्ट्र की प्रणाली भी नष्ट हो जाएगी। मेरे प्यारे ! देखो राजा के राष्ट्र में शंख ध्वनि होनी चाहिए। शंख ध्वनि का अभिप्राय है क्या वेद का जब उद्गीत गाने वाला ब्राह्मण हो और त्याग और तपस्या में रत्त रहने वाला हो तो मेरे प्यारे ! देखो ब्राह्मण्ड जब गान गाता है वह मानो देखो गान गाता है जटा पाठ, धन पाठ, माला पाठ, विषर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में जब वेदों का गान गाने वाला होता है तो वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे ! देखो ब्राह्मण की विवेचना करता हुआ वह वेद का आचार्य कहता है राजा के राष्ट्र में वह ब्राह्मण होता है जो तपस्वी होता है जो प्रत्येक गृह में वेद का प्रसार करने वाला हो। इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है क्या प्रत्येक गृह में, प्रत्येक नगर में और प्रत्येक राजाओं के यहाँ पुरोहित होने चाहिए। पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को देने वाले हों, जो पराविद्या में मानव को परणित करने वाले हों, गृहों को ऊँचा बनाने वाले हों वह पराविद्या में मुनिवरो ! ले जाते हुए पुरोहित कहलाते हैं। और वही पुरोहित मेरे प्यारे ! देखो गृह और समाज को

ऊँचा बनाते हैं, वही पुरोहित राष्ट्र को ऊँचा बनाते हैं। मेरे प्यारे ! देखो भगवान् राम ने अपने राष्ट्र में यह घोषणा की क्या मेरे राष्ट्र में क्या मानो पुरोहित होने चाहिए। मेरे राष्ट्र में ब्राह्मण होने चाहिए। ब्राह्मण जो वेद का पठन-पाठन करने वाला हो जो उदात्त में गान गाने वाला हो जो जटा पाठ और धन पाठ में गाने वाला हो और वह वेद के मर्म को जानने वाला हो प्रकाश में रत्त रहने वाला हो। तो जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो ब्राह्मण होता है वह राष्ट्र पवित्र होता है। और यदि ब्राह्मण की मृत्यु हो गई है तो राष्ट्र की भी मृत्यु हो जाती है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं क्योंकि बुद्धिमान सदैव रहने चाहिए और बुद्धिमान जब नहीं रहेंगे जब पुरोहितपन नहीं रहेगा तो मानव का देखो निचरला स्थल भी नहीं रहेगा, वह भी समाप्त हो जाएगा। तो इसीलिए पुरोहित, जितने भी क्रियाकलाप हैं वह मेरे प्यारे ! देखो राजा को यह विचारना चाहिए क्या देखो ब्राह्मण से द्वितीय स्थान पर कोई रूढ़िवाद तो नहीं पनप रहा है। ईश्वर के नामों पर जब रूढ़ियाँ पनप जाती हैं तो राजा के राष्ट्र अपने में रसातल को चले जाते हैं।

मेरे प्यारे ! देखो मुझे स्मरण आता रहता है एक मानव देखो एक ब्राह्मण देखो अअधिकारी तपस्या करने लगा। उसे अधिकार नहीं था, विवेकी नहीं था और विवेक न होने से जब वह तपस्या करने लगा तो मुनिवरो ! देखो ब्रह्म समाज में, बुद्धिमानों में एक नवीन क्रान्ति का जन्म हुआ और जन्म होने से राम के द्वार यह पुकार गई क्या महाराज देखो यहाँ अनाधिकारी, अधिकार में जा रहा है और यह तपस्या का इसे विवेक है नहीं, यह तमोगुणी तपस्या कर रहा है। तो मेरे प्यारे ! देखो स्मरण आता रहता है राम ने अपने अस्त्रों-शस्त्रों से उसका निधन किया और उसे शूद्र कह करके, देखो शूद्र कह करके उसको निधनम् ब्रह्मा। शूद्र उसी को कहते हैं जो अनाधिकार चेष्टा करने वाला है। अधिकार उसे है नहीं और अनधिकार में प्रवेश करता हुआ और वह मानव को देखो एक दूसरे को क्या अपनी अन्तरात्मा

को जो दुखित करने वाला है वह शूद्र संज्ञा राम ने प्रदान करके उसको विनष्ट कर दिया। नष्ट करने के पश्चात् मेरे प्यारे ! देखो वह जब त्राहि अमृतम समाप्त हो गया और पुनः से मानो देखो उन्होंने कहा, राम का यह वचन था क्या कोई भी रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिए क्योंकि रूढ़ि के कारण ही देखो राजा रावण के राष्ट्र का विनाश हुआ और यदि रूढ़ि नहीं होती तो रावण के राष्ट्र का विनाश नहीं हो सकता था। राजा रावण के राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई थीं। पुत्र मानो देखो किसी और मत को स्वीकार कर रहा है, पिता किसी मत को स्वीकार कर रहा है। मानो देखो वह यागों में ऐसे मधं ब्रह्मा जो दूसरों को नष्ट करने वाले यागों को करने वाले मानो देखो राक्षस एक सम्प्रदाय थी जो जिसमें राजा रावण निहित रहता था। राक्षस मानो देखो कोई अमृत नहीं था परन्तु वह केवल एक सम्प्रदाय कहलाता था। तो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह क्या मुनिवरो ! देखो राजा का राष्ट्र अपने में पवित्र जब बनता है जब राजा के राष्ट्र में चार प्रकार की नियमावली उसके यहाँ राजा के राष्ट्र में देखो नियमक ब्रहे वह अपने में निहित हो जाती है। उसको प्रत्येक प्राणी अपने में स्वीकार करने लगता है और स्वीकार राजा कराता है क्योंकि राजा स्वयँ जब उनको स्वीकार करता है तो प्रजा उनको स्वीकार कर लेती है।

मेरे प्यारे ! देखो मुझे स्मरण आता रहा है—भगवान् राम का यह कथन था प्रातःकालीन क्या देखो प्रत्येक गृह में, राष्ट्र देखो गृह-गृह में सुगन्ध होनी चाहिए। गृह-गृह में याग होने चाहिए। स्वाहा की ध्वनि होनी चाहिए प्रत्येक गृह में चाहे वह राष्ट्रीय गृह है, चाहे वह साधारण प्रजा का गृह है। मानो देखो सर्वत्र चाहे विद्यालय है सबमें स्वाहा की ध्वनि होनी चाहिए। उन ध्वनियों से जब राष्ट्र का देखो वायु मण्डल भरण हो जाता है तो वहाँ देखो प्रदूषण नहीं हुआ करता है। वहाँ महानता का दर्शन होता है, वहाँ समाज

एक महानता की ज्योति में ज्योतिवान हो करके अपने में धारयामि बनता है।

आओ मुनिवरो ! देखो मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता हूँ। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने मेरे प्यारे ! देखो यह भगवान् राम और वृतिका ब्रह्मचारी को अपने में निर्णय कराया। आज मैं बेटा ! अपने विचारों को किसी कल्प में ले गया परन्तु देखो मैं इस सम्बन्ध में न जाता हुआ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा क्या विष्णु नाम राजा का है और उस राजा का जो चार प्रकार के नियम बनाने वाला हो अपने राष्ट्र में और चार प्रकार के नियम जो समाज में स्थिर करने वाला हो वही मानो देखो वह राजा विष्णु कहलाता है। वही चतुर्भुज कहलाता है। चतुर्भुज कहते हैं चार प्रकार के नियमों को जिन्हें धारण करने के पश्चात् मानव अपने में मानवीयता का प्रसार करता हुआ और वह विष्णु रूप बन करके अपने को धारयामि बनाता है।

आओ मेरे प्यारे ! आज मैं तुम्हें प्रत्येक देखो आभा में नहीं ले जाना चाहता हूँ। केवल विचार-विनिमय यह प्रारम्भ हो रहा था क्या मैं त्रिवर्धा की चर्चा कर रहा था। मेरे प्यारे ! देखो यह संसार त्रिवर्धा में निहित रहने वाला है और त्रिचरण कहलाते हैं। उन्हीं में मुनिवरो ! देखो यह अपने में निहित रहने वाला भू, भुवः, स्वः यह भी तीन प्रकार का परमाणु है जिसमें विज्ञान है और मुनिवरो ! देखो तीन ही प्रकार के लोकों की प्रतिभा कहलाती है। भू, भुवः, स्वः यही अपने में रत्त रहने वाले हैं। तीन वर्ण कहलाते हैं बेटा ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य मानो देखो तीन वर्णों में यह तीन ही आश्रम होते हैं। मुनिवरो ! देखो चतुर्थ तो मोक्ष का स्थान है। तो इसी प्रकार त्रिवर्धा यह जगत कहलाता है। तो मेरे प्यारे ! देखो तीन अमृतों से मानो परणित होने वाला यह जगत है। तो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, आज का विचार-विनिमय क्या

कि हम परमपिता परमात्मा के इस अमूल्य जगत में परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है जो पालक है, जो पालना करने वाला है। मेरे प्यारे ! देखो यह यौगिक शब्द है इसके ऊपर विचार-विनिमय किया जाए और प्रत्येक मानव को अपने कर्त्तव्य में निहित रहना चाहिए। **कर्त्तव्य ही मानव को मानवीयता के क्षेत्र में ले जाता है** और अकर्त्तव्य ही, अनाधिकार ही मुनिवरो ! मानव को निचरली स्थली पर ले जाता है।

विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा को अपना मंगलम ब्रहे व्रत बना करके मुनिवरो ! उसके प्रति हमें आस्था हो करके हमें तपस्वी बनना चाहिए और विचारक बने जिससे हमारा जीवन एक पवित्रता की वेदी पर मानो रत्त हो करके और अपने में महानता में परणित हो करके परमात्मा को प्राप्त होते रहें और परमात्मा के जगत को सुदृष्टिपान करते रहें ऐसा बेटा ! हमारा आज का मन्तव्य है। अब हमारा वाक् ये समाप्त होने जा रहा है। **आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहें और देखो अपने को जानते हुए इस सागर से पार हो जायें।** यह है बेटा ! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चायें कल प्रगट करूँगा।

ओ३म देवाः आभ्याम् मनाः यम मानाः।

ओ३म् यश्शचाहम् गायन्त्वाः आपा रथम् मा प्रजाहाम्।

अच्छा भगवन् !

दिनाँक : 3 सितम्बर, 1992

समय : दोपहर 3 बजे

स्थान : श्री सुखबीर सिंह दाह, बेगमपुर

॥ ओ३म् ॥

आत्म-उत्थान का मार्ग

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा का आभामयी जगत माना गया है। जब हम ये अपने में दृष्टिपात् करते हैं कि वह जो मेरा प्यारा प्रभु है, उसका ही ये जगत एक आभा युक्त बनकर के रहता है। क्योंकि उसी की आभा हमें दृष्टिपात् आती है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने बहुत पुरातन काल में नाना वार्ताएँ प्रकट कीं। आज मैं उन विचारों को तो व्यक्त नहीं कर पाऊँगा, परंतु आज मैं कुछ यज्ञ के संबंध में यज्ञ के संबंध में तो नित्य प्रति ही उच्चारण किया जाता है। हमारे यहाँ यज्ञ रूप, ये जगत है। आज हम जब यज्ञ कर्म करने के लिये तत्पर होते हैं तो उसके साथ में हमारी मनोनीत भावना होती है, मनोनीत एक विचार होता है। और वह जो संकलन मानव को उत्पन्न होता है उसी संकलन के साथ में मानव की आत्मिक जो प्रतिपदा, प्रतिभा है, वह उन विचारों के साथ में निहित होती है। जिन विचारों का बाह्य जगत बनता है, उन विचारों का बाह्य जगत बनकर के हम सुंदर संसार की क्रियाओं में परणित होते हैं।

देव-पूजा

मानो ये जो क्रिया है, वही हमारा कर्मकाण्ड है। वही उस परमात्मा की एक आभा है, जिसको हमें प्रायः विचारना है। जहाँ मैं

ये कहा करता हूँ कि यज्ञ हमारे यहाँ देव पूजा मानी जाती है देव पूजा का अभिप्रायः ये कि देवों को हवि प्रदान करना। देवताओं का जब हम हवि देते हैं, तो उस हवि से हमारा अन्तरात्मा प्रसन्न होता है। क्योंकि हमारा जो ये मानव जीवन है ये देवताओं से सम्बन्धित है। अथवा देवताओं से हम प्रेरणा अथवा सहायता पान करते हैं और वे देवता जितने भी प्रसन्न होते हैं, जितने भी तृप्त रहते हैं उतना ही हमारा हृदय, हमारी मानवता उतना ही हम नम्र बनकर के हम देवताओं की पूजा में संलग्न हो सकते हैं। परंतु प्रत्येक मानव के नाना प्रकार के विचार रहते हैं।

मैं तो परंपरागतों से ये ही उच्चारण करता चला आया हूँ कि हम देवताओं की पूजा करें। देवता हमें उस मार्ग पर ले जाते हैं जिस मार्ग पर जाने के पश्चात् मानव की आंतरिक ध्वनि पवित्र होती है। मेरे प्यारे ऋषिवर ! हम जब आत्मा के सम्बन्ध में अथवा देवताओं के संबंध में विचार करने लगे, कि हमारा मानव शरीर है, इस मानव शरीर में देवता कार्य कर रहे हैं। मानव अग्नि से प्रकाश पाता है। कौन से अमृत को पान करता है, वायु से क्रिया का अस्वात होता है। अग्नि से तेज प्राप्त होता है। पृथ्वी से मुनिवरो ! देखो, हमें सुगंध प्राप्त होती है। अन्तरिक्ष से मुनिवरो ! देखो, हमें भरणता की अवकाश-कृति प्राप्त होती है। तो हमें इन सब वाक्यों पर विचार-विनिमय करना है कि याग से हम पञ्च महाभौतिक जो जगत है, इस पञ्च महाभूतों को हम श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं। और **ये पञ्चमहाभूत ही सृष्टि का मूल कारण हैं, ये ही मानव के शरीर की रचना का मूल कारण है।** मेरे प्यारे ! इसीलिए हमारे यहाँ ये सर्वत्र जगत एक प्रकार का यज्ञमयी माना गया है और इस यज्ञ को ही हमारे यहाँ, देवपूजा कहते हैं, देवताओं को तृप्त करना है।

आभायुक्त जीवन की प्रेरणा

अब हमारे देवता कौन हैं? बेटा ! जो बुद्धिमान, ब्रह्मवेत्ता और जड़वत हैं और जड़ से हमें नाना प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

तो हम जब एक-एक वस्तु पर अपना विचार-विनिमय करते हैं तो हमें प्रायः ऐसा प्रतीत होने लगता है, हमें ऐसा अनुभव होने लगता है कि वास्तव में हम परमपिता परमात्मा की आभा में युक्त हैं। परमात्मा की ही प्रतिभा में हम अपने को दृष्टिपात् करें, उसी में हमारा जीवन, उसी में हमारा याग है। मैंने कई काल में प्रकट करते हुए कहा कि **''संसार में नाना प्रकार के याग होते हैं परंतु उन यागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रक्रियाएँ होती हैं।''**

आज मैं अधिक चर्चा नहीं करूँगा, क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी अपना कुछ विचार व्यक्त करेंगे। जैसा इससे पूर्व शब्दों में हम उच्चारण कर आए हैं। केवल आज का विचार तो हमारा ये है कि हम संसार में याज्ञिक कर्म करने वाले बने, और **देवपूजा से हम आध्यात्मिक मार्ग को प्राप्त कर सकते हैं।** परंतु जैसे हम बाह्य जगत को रचाते हैं, यजमान विराजमान होता है, होता-जन होते हैं, अध्वर्यु होता है, उद्गाता होता है, मानो ब्रह्मा होता है। ये जब यज्ञ का एक स्वरूप बन जाता है। इसी प्रकार हम जब आध्यात्मिक याग करते हैं, आध्यात्मिक बेला में जाते हैं, आध्यात्मिकता को जागरूक करना चाहते हैं तो उस समय हमें होता भी चुनने होंगे, हमें अध्वर्यु, उद्गाता भी हमारे समीप होने चाहिए। हम प्रत्येक अंग को मुनिवरो ! देखो, अपना अध्वर्यु और अपना यजमान स्वीकार करते रहें और जब हम इस प्रकार की प्रतिभा में रमण करते हैं कि हमारे कौन-कौन हैं तो बेटा ! हमें ये प्रतीत होता है कि **हम वास्तव में जितना भी शुभकर्म कर रहे हैं वो सर्वत्र याग कहलाया गया है।** उस याग में हमें वास्तव में परणित होना है। याग का अभिप्राय ''यागोऽपि यदृत प्रवाहरुत्तम्,'' कि ये संसार रूप जो जगत है इस प्रकार का याग हो रहा है और ये याग होता हुआ, उसी याग में मानो परणित है, उसी से ये कटिबद्ध है। इसीलिए अपने जीवन को, याग में सहकारिता, परणित करते हुए मानो एक सुंदर हम याग के हम पथिक बने, हम अपने जीवन को आभा से युक्त बनाए। आज का विचार

अब मैं समाप्त कर रहा हूँ अब मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ अपना वाक् प्रकट करें।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् यज्ञाः रथं मनो वाचन्नमाः वस्तकृते।

विप्रजा यजूँ गायन्तताः मनो।।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ! मेरे भद्र-ऋषि मण्डल ! और ऋषि-समाज ! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, याग की चर्चा प्रकट करते हुए मुझे भी कुछ समय प्रदान किया कि तुम भी कोई वाक् प्रकट करो। परंतु आज मैं उपस्थित हूँ, उद्यत हूँ और हम अपने विचारों को कुछ सूक्ष्मता से प्रकट करेंगे। क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी याग के सम्बन्ध में नाना प्रकार की वार्ता प्रकट कर रहे थे। आज मुझे उन यागों के सम्बन्ध में तो विशेष चर्चा प्रगट नहीं करनी है। विचार विनिमय में ये है कि **आज हम याज्ञिक बनते चले जाएँ,** जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी प्रगट करते हुए कहा कि हम याग को क्रिया में लाने का प्रयास करें। परंतु याग की उन्होंने मीमांसा करते हुए, उन्होंने ऐसा कहा है कि ये जो याग है यह यजमान के द्वारा होता है। परंतु याग का अभिप्राय तो यही, कि **जितना भी शुभ और महान् कार्य है, उन सर्वत्र का नाम, एक प्रकार का याग माना है।** परंतु पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी प्रकट करते हुए नाना वार्ताएँ और नाना विचार देते हुए ऐसा कहा है कि हम सर्वत्र जितने प्राणी मात्र हैं, वे हम याग करने के लिए आ पहुँचे हैं। संसार में जितना भी ये जगत है, मानव समाज है, ये मानो सर्वत्र एक प्रकार का याग हो रहा है।

पुरातन काल में मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय कराते हुए कहा, ''वास्तव में गुरुदेव तो सर्वत्र जानते हैं,' पुरातन काल में हमारा, प्रत्येक मानव का जीवन एक प्रकार का याग बनकर के रहता था। याग का अभिप्रायः ये है कि हम संसार की उन कामनाओं में परणित

न हो जाएँ, जिन कामनाओं से केवल हम इस संसार के उन आवेशों में रमण कर जाएँ, जहाँ हमारा आत्मबल नष्ट, भ्रष्ट होता रहे।

माता याग रूप है

मैंने पुरातन काल में कहा था कि ''मेरी प्यारी माताओं के प्रत्येक अंग को हमारे यहाँ यागरूप माना है।'' ऋषि कहता है कि संसार में माता का जीवन, उनका प्रत्येक अंग, याग रूप रहता है, याग करते रहते हैं। परंतु देखो, उनसे जब हम कुवृत्तियों को धारण कर लेते हैं तो उससे हमारी याग की प्रथा समाप्त हो जाती है। परम्परा समाप्त हो जाती है। नाना प्रकार की रूढ़ियों में, आवरणों में, ये मानव समाज ऐसा कटिबद्ध हो गया है कि वे रूढ़ियाँ इस धर्म और माता को याग रूप स्वीकार नहीं करने देते। मुझे स्मरण आता रहता है संसार के उन आचार्यों की चर्चा, जिन्होंने देखो, धर्म को प्रचलित किया। अप्राह को धर्मों रूप देने का प्रयास किया। परंतु आज का विचार, केवल मैं धर्मों की मीमांसा करने नहीं जा रहा हूँ। मैं ये उच्चारण करने जा रहा हूँ कि माताओं के यज्ञ स्वरूप को नष्ट करना, उनको न जान करके, विवेक न होकर के आज हम उनको भोग विलासों का एक साधन बना लेते हैं। परन्तु देखो, वास्तव में ये साधन नहीं है।

विशाल याग

मुझे तो स्मरण आता रहता है ऋषि मुनियों का जीवन, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में प्रगट करते हुए ये कहा कि **जब पति-पत्नी की दर्शनों की चर्चाएँ प्रारंभ होती हैं तो वे एक प्रकार का याग करते हैं** और कहाँ तक का याग करते हैं कि जब माता-पिता एकांत स्थान में, मध्य रात्रि में, जब अंधकार छाया हुआ हो, उस समय जागरूक रहकर जब दर्शनों की चर्चाएँ, वेद की चर्चा होती हो, उस गृह में रहने वाला जो समाज है, उस गृह में, उस माता से जो पुत्र, पुत्रियाँ उत्पन्न होने वाली हैं, वे भी उन विचारों

को व्यक्त करके, माता-पिता के विचारों को व्यक्त करके, अपने में धारण करें, तो वे संस्कार बनते चले जाते हैं तो वह कितना बड़ा याग, कितना विशाल याग है। मानो कैसा विशाल याग है कि वे स्वयं तो विचार विनिमय करते ही हैं परंतु देखो, **वे बालक, बालिका जो उस गृह में उत्पन्न होने वाले हैं वे एक प्रकार के याग का फल जो उत्पन्न होता है गृह में है।** आह, वे भी माता-पिता के संकलन को, उन विचारों को अपने में धारण करने वाले बना करते हैं।

माता पूजनीय है

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो आत्मा की विवेचना करते रहते हैं। मैं आत्मा की विवेचना अधिक नहीं करने आया हूँ। केवल विचार-विनिमय यह कि आज हम माताओं के शरीर को याग रूप स्वीकार करें। परंतु ये याग रूप क्यों नहीं होने दिया। इसका मूल कारण है कि रूढ़ियों में, आवरणों में छाया हुआ ऐसा जगत है कि इसमें ये भी उच्चारण किया जा सकता है कि इस संसार का क्या बनेगा, इस जगत का क्या बनेगा? आचार्यों ने तो सुंदर-सुंदर हृदय ग्राही शब्दों का प्रतिपादन किया है। मुझे स्मरण है परन्तु कहीं माताओं को मानव एक दृष्टि से स्वीकार कर रहा है, दूसरा सम्प्रदाएँ माताओं के अस्तित्व को स्वीकार नहीं कर रहा है। परन्तु यहाँ वेद कहता है माता प्रभां कृतं पूजन्नं ब्रो कृति आस्ताः वेद का ऋषि कहता है ''कि माता पूजनीय होती है, माता का पूजन करो'', ऋषि कहते हैं, मनु महाराज ने कहा **स्वाति प्रहा कृत्स्यनं वेदां मह कृति' अत्युहि देवाः** वेद का ऋषि तो बहुत ऊँची-ऊँची उड़ान उड़ता है और ये कहता है कि ''जिस गृह में माता के नेत्रों से अश्रुपात होता है वह गृह नारकीक बन जाता है।'' परंतु यहाँ ऋषि मुनियों ने कितनी ऊँची विचारधारा है, **ये विचारधाराएँ हमें केवल वैदिक साहित्य में प्राप्त होती है।** ये वार्ता हमें मानो मोहम्मद से प्राप्त नहीं होती, ये ईसा से प्राप्त नहीं होती, ये बुद्ध से प्राप्त नहीं होती, ये मानो देखो, हमें महावीर

से प्राप्त नहीं होती, परंतु ये सब वार्ताएँ हमें वैदिकता से प्राप्त होती हैं। **हमें उन विचारों को प्रायः धारण करना चाहिए, जो आर्ष पोथियाँ हैं उनसे प्राप्त होती हैं।** जैसा याज्ञवल्क्य मुनि ने माताओं को सर्वत्रता में एक प्रकार का याग माना है। यहाँ कन्यायाग माना है मानो देखो, यहाँ देवीयाग भी माना है।

देवीयाग का अभिप्रायः मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इससे पूर्व के शब्दों में विवेचना कर रहे थे, **देवी याग का अभिप्राय है** कि ''देवी की पूजा करना।'' देवी के पूजा का अभिप्राय है, प्रकृति की पूजा करना और प्रकृति की पूजा का अभिप्राय है, प्रकृति के जो अवशेष हैं उनका सदुपयोग करना, उनको क्रिया में लाना। वही उनकी पूजा कहलायी जाती है। आज हम माता की पूजा करना चाहते हैं। आज हम कन्या को याग बनाकर के उसको याग बनाना चाहते हैं। मानो देखो, हम देवी याग की रचना चाहते हैं। परंतु उन यागों में क्या है? **याग की मीमांसा केवल संक्षिप्त रूप में पूज्यपाद गुरुदेव ने की है कि याग का अभिप्राय है, धारण करना, याग का अभिप्राय है पालन करना। उसके सदुपयोग करने का नाम याग माना है।**

रूढ़ियों से कुरीतियाँ

आज मैं इन वाक्यों में अधिक नहीं जाना चाहता हूँ, परंतु यहाँ रूढ़ियों ने माताओं के अस्तित्व को नष्ट करते हुए, आज संसार में जो कुरीतियाँ दृष्टिपात आती हैं, आज माता के शृंगार को भ्रष्ट होता हुआ दृष्टिपात् किया जाता है। आज मानव यागों की प्रथा को समाप्त करके, अपनेपन में अभिमानी बनकर के और ये स्वीकार करके कि ईश्वर कोई वस्तु नहीं, ये सब पाखंड है। परंतु मैं आज नाना प्रकार की वार्ता प्रकट करने नहीं आया हूँ। मैं जब ये प्रश्न करता हूँ कि अरे, भाई, तू ये तो जानता है अस्वात् प्रति ब्रह्मा, ये संसार कोई वस्तु नहीं है। परंतु तुम्हारा भी कोई अस्तित्व है क्या? तुम्हारी भी कोई महानता है क्या? परंतु देखो, उस समय कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता। तो परिणाम केवल यही कि हम संसार के अवशेषों पर

विचार-विनिमय करें। जिन मानो अवशेषों से हमारा कल्याण होता है। **हम वास्तव में वेद की पवित्र-ध्वनि को अपनाते हुए, याग में रमण करते चले जाएँ।**

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वाक् प्रकट कर रहा हूँ कि जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही है, वहाँ सामगान का पारायण हुआ, परन्तु उसका पूर्ण वहाँ ''अस्वाति अध्वे'' समाप्त हुआ। परंतु देखो, ये आभा गतप्रव्हे अस्वति। मैं एक वाक् अवश्य प्रगट किया करता हूँ, कि संसार में मृत्यु दिवस कदापि आवेशों में नहीं आना चाहिए। क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में 'मृत्यु' कोई शब्द नहीं होता, जब मानव की मृत्यु नहीं होती, तो मृत्यु दिवस का मनाना भी, मानव के लिए एक प्रकार की विडंबना है। उस विडंबना को कदापि भी लाना नहीं चाहिए। हमारा आत्मबल ये कह रहा है, वेद का ऋषि कहता है ''आत्म ब्रह्मा प्रथम सूर्यलोकं ब्रह्मा कृति उधानो आस्ताः'' कि संसार में किसी काल में भी मृत्यु नहीं होती। जब आत्मा की मृत्यु नहीं होती, परमाणुवाद भी नष्ट नहीं होता तो मानो देखो, मृत्यु दिवस का भी अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। इसीलिए यह मानव की विडंबना है।

ब्रह्मा जी का जन्म दिवस

जन्मदिवस मानव का सदैव होना चाहिए। हमारे वैदिक साहित्य में जन्म दिवस की महान् से महान् प्रथा आयी है। क्या, किसी काल में हमारे पडपिता का जन्म हुआ था, जमदग्नि ऋषि का जन्म हुआ, किसी काल में हमारे पिता, महापिता का जन्म हुआ, तो हम जन्मदिवस मनाते रहे। मैं परंपरागतों से ही अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रेरणा लेता रहता हूँ। जब हम आश्रमों में रहते थे तो हम ब्रह्मा जी के जन्मदिवस की प्रथा को प्रायः मनाते रहते थे। आज भी वो परंपरा चली आ रही है मानो जिसको हम **वसंत ऋतु में वसन्त पंचा दसी** कहा करते हैं। उस दिवस मानो संसार में ब्रह्मा का जन्म हुआ था।

जन्म दिवस पर याग

इसी प्रकार **हमारे ऋषि मुनियों ने जन्म दिवस को उत्सव माना है।** मृत्यु दिवस का अपना कोई अस्तित्व नहीं माना है। क्योंकि जब मृत्यु होती ही नहीं, तो उसका अस्तित्व भी क्या है। एक आत्मा गृह से चली गई, सूर्य मण्डल में, उस आत्मा की प्रतिभा, उसके कर्मों का तारतम्य, उसके साथ में रमण करने लगा। वह आत्मा किसी न किसी लोकों में रमण करता चला गया, अपना आनन्द मना रहा है, जीवन की आभाओं में रमण कर रहा है। परंतु देखो, उसके मृत्यु दिवस का कोई अस्तित्व हमारे जीवन में नहीं होना चाहिए। **जन्मदिवस अवश्य मनाना चाहिए।** वह जो जन्मदिवस है, वही मानव को अपने उस बाल्यकाल की आभा में पुनः से अवृत्त करता है और वह जो जन्म है, क्योंकि संसार में जीवन ही जीवन है ''मृत्यु, अंधकार तो है ही नहीं। ज्ञान में अन्धकार नहीं होता और अज्ञान में अन्धकार होता है। इसीलिए हम अंधकार को लाने का प्रयास क्यों करें। परंतु मैं इस सम्बन्ध में अधिक विवेचना प्रगट करने नहीं आया हूँ। केवल ये वाक् प्रकट करने आया हूँ कि **''संसार में अपने मानवीय जीवन को सदैव ऊँचा बनाना चाहिए, ऊर्ध्वा गति में ले जाना चाहिए।''** आज ऐसे अवशेषों में परणित, जिस आत्मा का ''पुत्रां यज्ञे ब्रह्मे वर्धा हम्ब्रहे कृत'' जन्मदिवस की आभा में कल्पना करते हैं, हम ये विचारते रहते हैं कि पुत्रों गत्प्रहवास्ति ऐसे पुत्र मानो संसार में सर्वत्र प्राणियों के होने चाहिए। जिनके हृदय में वेद की प्रथा, वेद की परम्परा लाने का प्रयास किया जाए, परंतु इसमें संशोधन केवल इतना अवश्य करना चाहिए कि मृत्यु दिवस के पश्चात् हम इनके आसन पर जन्मदिवस की प्रथा को अपने गृह में लाने का प्रयास करें, जन्म दिवस पर याग की प्रथा को लाने का प्रयास करें, क्योंकि वह आत्मा न यहाँ मृत्यु में था, न सूर्य मण्डल में, न किसी लोकों में जाने के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हुआ है। इसीलिए आज हम जीवन को उस महान् वेदी पर लाने का प्रयास करें। आज मैं अधिक विवेचना तो देने नहीं आया हूँ। केवल आज का विचार हमारा ये कि हम वैदिक साहित्य

और वैदिक परम्परा पर विचार-विनिमय करने वाले बनें और वैदिकता को लाने के लिए हम सदैव अपने जीवन में आभा से युक्त होते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ।

पवित्र, महान् जीवन बुद्धिमान ब्राह्मणों की देन है

परंतु समाज में नाना प्रकार की कुप्रथाएँ तब प्रारम्भ हो जाती हैं जब बुद्धिमान ब्राह्मण नहीं रहते। तब रूढ़ियों का प्रचलन हो जाता है तो यथार्थ प्रथा, परम्पराएँ समाप्त हो जाती हैं। यहाँ समाज में जब मैं दृष्टिपात करता हूँ तो नाना प्रकार की कुप्रथाएँ हैं और ऐसी प्रथाएँ हैं जिनको दृष्टिपात करके हमारा अन्तरात्मा बड़ा दुखित होता है और हम ये कहा करते हैं, हे प्रभु ! तू कहाँ चला गया? वेद के आचार्यों को क्यों नहीं तू संसार में जन्म देता। जिससे मानव वेद का पठन पाठन करके कुसमाज, कुरीतियों को नष्ट करने वाला, और मानो शुद्धता को धारण करने वाले पण्डित होने चाहिए। जिससे हमारा जीवन पवित्रता में परणित होता हुआ महानता की वेदी पर रमण करता हुआ, हम इस संसार में मानवता का प्रसार कर सकें।

यजमान को आशीर्वाद

आओ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये प्रगट कराने आया हूँ, मैं यजमान को अपना आशीर्वाद, उनको ये उच्चारण करने आया हूँ कि उनका जीवन सदैव पनपता रहे, उनका द्रव्य शुभकार्यों में परणित होता रहे, वे देवीयाग करते रहें, सामगान गाते रहें, जिससे मानो देखो उनके गृह में, द्रव्य की किसी प्रकार की हानि न हो सके। क्योंकि द्रव्य की उन मानवों के द्वारा प्रायः हानि हो जाती है, जो द्रव्य में परणित हो करके, उसमें इतने लिप्त हो जाते हैं कि अंत में वह आत्मा की पिपासा को भी पूर्ण नहीं कर पाते।

आत्मा की पिपासा

आज जब मैं संसार को दृष्टिपात करता हूँ, जिन राष्ट्रों में, जिस समाज में देखो, याग इत्यादि आत्मिक कर्म नहीं होते, वे अपनी

आत्मा में पिपासी रहते हैं। वे प्रीति चाहते हैं, प्रभु की महानता चाहते हैं, करुणा चाहते हैं परंतु वह करुणा तो मानव में होनी ही चाहिये।

विचार क्या ''अभ्यागतं मनुवाचा कर्मणं ब्रह्वे'' वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहा करते हैं, पूज्यपाद गुरुदेव ने भी कई काल में प्रगट कराते हुए कहा है, कि वे सदैव आत्मा की पिपासा को शान्त करते रहते हैं अहा ! द्रव्य से जिस गृह में याग होते हैं, परमात्मा के निष्काम कर्म में परणित होते हैं, उस गृह में, द्रव्य की किसी काल में हानि नहीं हो पाती। परंतु हानि वहाँ होती है जहाँ द्रव्य रहते हुए भी मानव हानि में रहता है। एक मानव द्रव्यपति है, आत्मा की पिपासा को शांत नहीं कर पाता, आत्मा की पिपासा बनी ही रहती है। परंतु वह द्रव्य आत्मा की पिपासा को शांत नहीं करेगा। आत्मा की पिपासा, जैसे मन की पिपासा, भौतिकवाद की पिपासा, शरीर के पालन-पोषण की पिपासा, द्रव्य से समाप्त हो जाती है परंतु देखो, **आत्मा की पिपासा ज्ञान और प्रकाश से समाप्त होती है।** इसलिए ज्ञान और प्रकाश होना चाहिए। धर्मता होनी चाहिए और द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। तो जहाँ सदुपयोग होता है उसके द्वारा द्रव्य की हानि नहीं होती। हानि वहाँ होती है जहाँ द्रव्य का दुरुपयोग किया जाता है। चरित्र को द्रव्य से भ्रष्ट किया जाता है। इसी द्रव्य के कारण नारकिकता में परणित हो जाता है, मादक वस्तुओं का पान करके मानव ऐसी स्थिति पर चला जाता है कि मानो इसका शरीर ही नहीं रहता और उसका अन्तरात्मा, पिपासी रहकर के उसको धिक्कारता रहता है। तो ऐसे जो द्रव्य का दुरुपयोग किया जाता है तो मानव नारकी बनता है और अगले जन्मों में वह मानव, उन लोकों में जाता है जहाँ प्रकाश का एक अंकुर भी प्राप्त नहीं हो पाता।

इसीलिए आज का विचार हमारा क्या कि हम सदैव अपने जीवन को ऊँचा बनाने वाले बनें। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत होकर के नाना प्रकार की आभाओं को सदैव धारण करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैं यागों की प्रशंसा

में सदैव रमण करता रहा हूँ। **याग से ही हमारा उत्थान होता है** क्योंकि इस बाह्य, भौतिक याग के साथ में जब हम आध्यात्मिक याग करते हैं, आध्यात्मिकवाद में रमण करते हैं तो हम आध्यात्मिक याग, ज्ञान और प्रकाश में रमण करते हुए, हम परमात्मा के समीप चले जाते हैं। **ऋषि मुनियों ने कहा है ''कि ये जो संसार है, ये एक प्रकार का याग है।''** इसमें व्यापकता का नाम ही याग कहलाता है। जितना मानव का वाद विचित्र और व्यापकवाद में रमण करता रहेगा उतना ही देखो, ये यागों में परणित होता रहेगा।

महाभारत के काल के पश्चात् याग

परंतु वाममार्ग-समाज ने यागों की प्रथा को मानो देखो, कुप्रथा में परिवर्तित कर दिया। उनमें देखो, मांस की स्थापना जैसे अजामेघ याग अजामेघ में बकरी के मांस की आहुति देना, गौ मेध याग में गौ नामक के पशु की आहुति देना, नरमेघ याग में मानव की बलि प्रदान करना, इसी प्रकार यहाँ देखो, अश्वमेघ याग में घोड़े जैसे पशु की बलि देना, ये मानो देखो, कुप्रथायें इस समाज में, पूर्व काल में महाभारत काल के पश्चात् आयीं। अहा, देखो, उन कुरीतियों का परिणाम ये हुआ कि यागों की प्रथा समाप्त होने लगी और समाज ने संघर्ष कर दिया।

गौ मेघ, अजामेघ याग और अश्वमेघ याग

परंतु देखो, गौ मेघ का अभिप्राय है गौ कहते हैं ''ब्रह्मचारी को'' मेघ कहते हैं ''विद्या को'', जो बालक को, पशु को प्रकाश में लाता है अथवा मेघ में लगा देता हैं उसका नाम गौ मेघ कहते हैं। उसी के आधार पर साकल्य से याग किया जाता है। अजा नाम बकरी को भी कहते हैं और अजा नाम प्रकृति का भी है मानो देखो प्रकृति को हम जब अजा में परणित करते, प्रकृति के विज्ञान को जानें, और विज्ञान को जानने का नाम अजामेघ याग है। मानो, याग के परमाणुओं से हम यंत्रों का निर्माण करें, उनसे लोक लोकान्तरों की यात्रा करें, तो वो हमारे यहाँ अजामेघ याग कहलाता है।

देखो 'अश्व' नाम राजा का है। राजा और प्रजा दोनों मिल करके राष्ट्र को ऊँचा बनायें, और संसार को विजय करके अश्वमेघ याग करें।

गम्भीर वेद अध्ययन आवश्यक है

परंतु संसार में वाममार्ग अर्थ का अनर्थ करके यज्ञों की प्रथा को समाप्त करने लगा। मानो देखो, समाप्त क्या? मानव के हृदय में एक विडंबना जागी, महात्मा बुद्ध ने कहा कि ''मैं ऐसे वेद को स्वीकार नहीं करता, जिस वेद में हिंसा हो, जिस यज्ञ जैसे शुभ कर्मों में बलि की प्रथा हो। ऐसा याग मैं कदापि स्वीकार नहीं करता चाहे वह कितना भी महान् कर्म हो,'' परंतु बुद्ध नहीं कह सकते इस वाक् को, इस वाक् को हम भी उच्चारण कर सकते हैं। परंतु बुद्ध की इतनी सूक्ष्मता रही कि उन्होंने वेद का अध्ययन, तार्किक रूपों से नहीं किया उनके वेद के अध्ययन को गम्भीरता से न करने का परिणाम क्या हुआ कि बुद्ध परम्परा ने मानो देखो, समाज को और भी अंधकार में परणित कर दिया।

परिणाम क्या, हम वाममार्ग को, कुप्रथावादियों को समाप्त करना चाहते हैं तो हमारे द्वारा ज्ञान और विवेक होना चाहिये। हमारे द्वारा अपनी एक ऊँची प्रथा होनी चाहिए। हमारा प्रयास कुविचारों को समाप्त करके, हमारे सुविचार होने चाहिए, जिससे हम समाज को अग्रणीय बना सकें। परंतु इसी प्रकार नाना आचार्यों ने कहा कि हमारे यहाँ समाज में देखो, पुत्रियों का और पत्नियों का अस्तित्व नहीं है। ईसा ने और मोहम्मद, दोनों ने ही एक अस्थि से माता के शरीरों को स्वीकार किया। एक अस्थि से शरीर को स्वीकार करने वालों से यदि हम ये प्रश्न करते हैं और कहते हैं कि तुम्हें लज्जा नहीं आयी इन वाक्यों को स्वीकार करते हुए, जिस माता के गर्भ से हम उत्पन्न होते हैं, उस माता का अस्तित्व न करेंगे तो हमारा समाज और हमारा धर्म, हमारी मानवता कुछ काल में समाप्त हो जाएगी।

इसीलिए आज का विचार क्या कि वेद कहता है कि हम माताओं का पूजन करें, माताओं के प्रति हमारी निष्ठा होनी चाहिये परंतु देखो, जिनके गर्भ से ऋषि मुनियों का जन्म होता है, जिनसे जीवन उद्‌गम और ऊर्ध्वा बना करता है हम सदैव उनके पुजारी बनें।

महान् मार्ग को अपनाने का परामर्श

हम सदैव वेद के साहित्य को अपनाने वाले बनें। आज मैं अधिक विवेचना नहीं दूँगा, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये निर्णय देना चाहता हूँ कि जितनी कुप्रथायें हैं, इन कुप्रथाओं को समाप्त करना है तो हमें एक महान् मार्ग को अपनाना होगा और वह मार्ग है याग का, याग करते हुए उस पर हमारी एक क्रान्ति होनी चाहिए, ज्ञान और विवेक होना चाहिए। जिससे हम राष्ट्र और समाज को ऊँचा बना सकें। आज मैं इन शब्दों के साथ में अधिक विवेचना प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय में ये कि आज ये जो समाज में, आधुनिक काल में जो त्राहि-त्राहि हो रही है, उसका मूल कारण है, कि हमने धर्म और मानवता को जाना नहीं। **यदि आज का राष्ट्र और मानव धर्म और मानवता को जान जाये तो ये मानो कुप्रथायें समाप्त हो जायेंगी और एकोकी राष्ट्र का जन्म करते हुए मानो देखो, हम उससे समाज को ऊँचा बनाये।**

अहा, ये न रह करके, कोई समय आ रहा है जब मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है कि वो समय निकट है कि जब यहाँ देखो, एक-एक स्थली पर संग्राम की प्रतिभा और अग्नि प्रचण्ड होती चली जायेगी। परंतु वो समय दूरी नहीं है जब मानव-मानव के रक्त का भक्षण करने वाला बनेगा। तो वह समय दूरी नहीं, वह समय निकट आ रहा है और आता रहता है। परंतु देखो, मैं ये विचार केवल इसीलिए व्यक्त करने जा रहा हूँ कि आज यदि मानव ने अपनी मानवीयता को ऊँचा नहीं बनाया, तो समाज में वह समय निकट आ रहा है।

यजमान को पुनः आशीर्वाद

परंतु इन वाक्यों को मुझे उच्चारण करना नहीं है, मैं तो केवल ये वाक् प्रकट करने आया हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता हुआ, यजमान को अपना आशीर्वाद तो क्या, मैं ये उच्चारण करना चाहता हूँ कि आयु दीर्घ होनी चाहिए, जिससे धर्म और मर्यादा की रक्षा होती रहे। हे यजमान ! मैं केवल अपनी इस वाणी से यही उच्चारण कर रहा हूँ कि तेरा हृदय उदार और महानता में परणित होता रहे, गृह में कुप्रथा समाप्त होनी चाहिए और ज्ञान और वेद के द्वारा प्रत्येक मानव को महानता में परणित होना चाहिए। परंतु जिससे हमारी मानवता, हमारा जीवन ऊँचा बने, गृह में सदैव किसी प्रकार की भी हानि न हो पाये, धर्म की और धर्म के साथ में श्री लक्ष्मी की भी हानि न हो पाये।

इन वाक्यों के साथ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा। विचार क्या कि आज यही आशीर्वाद कहो परंतु सदैव मेरी ये उद्‌गमता रहती है कि जिन ब्राह्मणों के द्वारा वेद का पठन-पाठन होता है उनका आयु दीर्घ हो, होताजन अपनी त्रुटियों को समाप्त करके, ऊँचे से ऊँची गति को प्राप्त होते रहें। ये मेरा सदैव एक वाक् रहता है, इन वाक्यों के साथ हे यजमान ! तू सपत्नी विराजमान होकर के यज्ञवेदी पर देखो, जैसे अर्धभाग और दिग्ध उत्तर प्रश्नों में परणित होते रहे, जैसे प्रजापति के यहाँ मैं तो अपने पूज्यपाद गुरुदेव का वो समय कितना विचित्र था, मानो जहाँ उत्तर, प्रश्न होते थे, महा भयंकर वनों से लाया जाता, मैं तो जब संसार को, कर्म की प्रथा को, कर्म के उस विचित्र दृश्य को दृष्टिपात करता हूँ तो मेरा हृदय तो किसी काल में दुखित हो जाता है और किसी काल में हर्ष ध्वनि करने लगता है।

परंतु मैं इन वाक्यों को अधिक उच्चारण करना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय में ये, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है कि

समाज में जब ऐसे-ऐसे उत्तम कर्म होते रहें, याग होते रहें, परंतु कुप्रथा से नहीं, केवल मृत्यु दिवस नहीं, जन्मदिवस की प्रतिभा होनी चाहिए, जिससे हमारी संस्कृति में, हमारे वैदिक साहित्य में, मृत्यु का कोई शब्द नहीं है। केवल जीवन ही जीवन को स्वीकार किया है ऋषि मुनियों ने। तो इसके साथ मैं, यजमान को सदैव यही कि उनका जीवन दीर्घ बने, उनके हृदय से शोकाकुल की भावनायें, शोकाकुल की तरंगें न आयें, सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहे। इसके साथ मैं अपने वाक्यों को यहीं विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने कुछ परम्परा की वार्तायें प्रगट कीं, कुछ आधुनिक काल की प्रतिभा भी थी। परंतु ये कोई वाक् नहीं, महानन्द जी की ऐसी कुछ प्रेरणा है कि आप भी कुछ उच्चारण करें। मेरे प्यारे महानन्द जी ने यज्ञ की कुछ चर्चायें कीं। परंतु हम भी इनके साथ में यजमान को यही उच्चारण करने आये हैं, हम उच्चारण करेंगे कि 'स्वाति द्रष्ट्वदे सौभाग्यं ब्रह्मस्ते' मानो इनका सौभाग्य और जीवन की ज्योति सदैव जगती रहे, वह मानो सुषुप्ति में न जाये, सदैव उनका जीवन महान्, सुदृढ़ और मानवता की, मानवीयता में देववत् बनता रहे। इनके व्यापक विचार, संकीर्णता में न आये और व्यापकता में सदैव परणित रहें, ये वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा, इसके पश्चात् वार्ता समाप्त होगी।

पूज्य महानन्द जी — अच्छा भगवन् !

पूज्यपाद गुरुदेव — आनन्द मंगलम् शान्ति।

दिनाँक : 7 मई, 1973

समय : प्रातः 10 बजे

स्थान : 38, जोर बाग
नई दिल्ली

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	50.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	110.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	25.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	40.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	25.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	25.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	65.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	70.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष : 01234 240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। दूरभाष : 0131 2606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष : 011-26498737
5. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) दूरभाष : 9410452076
7. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) दूरभाष : 09412139333
8. श्री विवेक त्यागी, 16ए अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष : 0120-2642052
10. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110ए मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) दूरभाष : 9899228860, 9871367937
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। दूरभाष : 9910589486
12. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) दूरभाष : 9313530505
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
15. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ.प्र.)।

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''संहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत है :-

पंजाब नैशनल बैंक

खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389

IFS Code – PUNB–0014900

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

नई दिल्ली

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री वी.पी. सिंह, वसुंधरा, गाजियाबाद	250 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा	125 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़।	100 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मास्टर कवन्धी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

वैदिक अनुसन्धान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते पर व निम्न पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017
दूरभाष : 011-26498737

शृङ्गीऋषि बेवसाईट
Website : www.shringirishi.in
Email : www.contact@shringirishi.in

धन्यवाद

श्रद्धालु दानदाताओं ने पूज्यपाद गुरुदेव महर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों को ''संहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिये अपना सहयोग बड़ी उदारता से निम्न प्रकार से हुत किया है जिसके लिये समिति सभी का हृदय से आभार प्रकट करती है और सभी के परिवार की सुख, शान्ति एवम् समृद्धि के लिये परमपिता परमात्मा से विनय करती है :-

1.	श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय, वैशाली	260 रु.
2.	श्री अक्षय कुमार बहल	500 रु.
3.	श्री प्रदीप त्यागी, ग्राम मकनपुर, गाजियाबाद	502 रु.
4.	श्रीमति मीरा भगत, रानी बाग, नई दिल्ली	1100 रु.
5.	श्री सुरेश सैनी, अहमदाबाद, गुजरात	2100 रु.
6.	श्री राजपाल त्यागी, पंचशील, मेरठ	3100 रु.
7.	श्री विनोद त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद	11001 रु.

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हे मानव ! तू अपने सूक्ष्म से जीवन के लिए प्रभु के पूजन को न त्याग। क्योंकि प्रभु की जो उदारता है वह तेरे हृदय को जितना छू जायेगी उतना तेरा जीवन ऊँचा बन जायेगा। और जितना तू प्रभु से दूर रहेगा, मानसिक चिंताओं में रहेगा, द्रव्य की लोलुपता में रहेगा, जितनी तेरे में धृष्टता आती चली जायेगी उतनी तेरे मानवीयता तेरे से दूरी हो करके एक समय वह आयेगा कि तुझे महाराजा दुर्योधन की भाँति वह स्वयँ तुझे निगलती चली जायेगी। इसी प्रकार हमें विचार-विनिमय कर लेना है कि हम किस प्रकार के बनें हम अपने जीवन को सर्वशः वैदिक बनायें। क्योंकि ज्ञान-कर्म-उपासना से हमारा जीवन सुगठित होना चाहिए।

–पूज्यपाद गुरुदेव

वर्ष 42 : अंक : 497
फरवरी 2014

मूल्यः
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पंजी०
के लिए नवप्रभात प्रिटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 26498737

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-02-2014
Published on 5th day of the same month